उत्कलमणि

संकलित

ओड़िशा प्रान्त में पुरी जिलान्तर्गत साक्षिगोपाल से कोई ८ किलोमीटर दूर भार्गवी नदी के तट पर स्थित सुआण्डो नामक गाँव में ९ अक्तूबर १८७७ ई० को एक बालक का जन्म हुआ । उसके पिता का नाम दैतारि दास था और माता का नाम स्वर्णमयी। 'होनहार वीरवान के होत चीकने पात' कहावत के अनुसार बचपन से ही यह बालक बड़ा होनहार था । नियति ने बचपन में ही इस बालक को मातृ सुख से बंचित कर दिया । उसकी बाल विधवा बुआ कमला पितृगृह में रहती थीं । उन्होंने इस मातृहीन शिशु गोपबंधु का लालन-पालन किया ।

जब कभी बालक गोपबंधु को अपनी माता की याद आती, वह गाँव के समीप बहने वाली भार्गवी नदी के किनारे चला जाता । वहाँ के शान्त वातावरण में अकेला बैठा प्राकृतिक सुषमा में खो जाता । उसे अपनी माँ प्रकृति की गोद में साक्षात् बैठी नजर आती थी । वह नदी ही उस बालक की माँ बन गयी थी ।

गाँव की चटसार में गोपबंधु की शिक्षा आरंभ हुई । वे सबसे पहले चटसार में पहुँच जाया करते थे । एक दिन की बात है– दूसरे लड़कों के साथ मिलकर गोपबंधु ने किसी के बगीचे से नारियल चुराया था । दूसरे दिन मालिक ने गुरुजी से शिकायत की । दण्ड के डर से सब साफ इनकार कर गये, पर गोपबंधु ने सारी बात सच-सच बता दी । गुरुजी ने उनकी सत्यनिष्ठा की भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

फिर पिताजी के द्वारा स्थापित गाँव के उच्च प्राथमिक विद्यालय में उन्होंने पढ़ा । सुआण्डो से ८ किलोमीटर दूर रूपदेईपुर के मध्य ओड़िआ विद्यालय से वे एक कृती छात्र के रूप में उत्तीर्ण हुए। उन्हें छात्रवृत्ति मिली । इसके बाद पुरी जिला स्कूल में उन्होंने प्रवेश लिया । यहाँ उच्च कोटि के छात्र वक्ता के रूप में उनकी ख्याति थी । स्कूल में उनकी वेशभूषा साधारण थी, व्यवहार निष्कपट

था, विचार स्वतंत्र थे । जहाँ लोग पाश्चात्य सभ्यता एवं रीति-नीति का अनुकरण करने में गौरव मानते थे, वहीं गोपबंधु वेशभूषा, रीति-नीति, चाल-चलन में अपनी राष्ट्रीय परम्परा का तनिक भी त्याग करना नहीं चाहते थे । वे अपने गाँव की बुनी 'कलापाहाड़ी' धोती पहनते थे तथा चद्दर डालकर स्कूल जाते थे । उन्होंने शिखा भी रखी थी । इसमें वे गौरव का अनुभव करते थे । १८९८ ई० में उन्होंने एण्ट्रैस की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की । उन्हें दस रुपये की मासिक छात्रवृत्ति मिली और वे रेवेंशा कॉलेज में पढ़ने आए । छात्रावास में वे हरिहरदास जी के साथ एक ही कमरे में रहते थे । दोनों में खुलकर भारत की विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श होता था । इसी समय से वे ओड़िआ में देशप्रेम पर कविताएँ भी लिखने लगे थे । १९०२ ई० में उन्होंने बी०ए० की परीक्षा दी, किन्तु देशसेवा के कार्यों में व्यस्तता एवं पिताजी के देहावसान के कारण वे परीक्षा में असफल रहे । दूसरे साल १९०३ ई० में उत्तीर्ण हुए । १९०५ ई० में वे कानून पढ़ने के लिए कोलकाता गये । वहाँ वे प्रतिदिन गंगा स्नान के लिए जाते थे । पहले की तरह ही कोलकाता में भी वे 'कलापाहाड़ी' धोती पहनते और चद्दर का प्रयोग करते थे । उनके साथी यद्यपि उनकी वेशभूषा, चाल-चलन को पसन्द न करते, पर उनकी स्वदेशी भावना की कदर करते थे । १९०६ ई० में उन्होंने बी० एल० की परीक्षा पास की ।

वकील के रूप में एक स्वतंत्र पेशा अपनाने के बाद भी, उन्होंने शिक्षक जीवन का आदर्श स्वीकार किया। अंग्रेजी शासन में पराधीन होकर भी उन्होंने नवीन शिक्षा पद्धति का श्रीगणेश किया । खुले आकाश तले, मौलश्री की छाया में वर्तमान 'शान्तिनिकेतन' की तरह, उन्होंने प्रकृति की गोद में १९०९ ई० आश्विन मास की पूर्णिमा के दिन एक मिडिल अंग्रेजी स्कूल की स्थापना वकुल वन में 'सत्यवादी वन विद्यालय' के नाम से की । वहाँ शिक्षकों एवं विद्यार्थियों सभी को स्वतंत्रता का बोध होता था । पहले वे अकेले शिक्षक थे, बाद में पं० नीलकण्ठ दास, गोदावरीश मिश्र, हरिहर दास, कृपासिंधु मिश्र ने भी उनके साथ अध्यापन किया । इस राष्ट्रीय विद्यालय को देखकर महात्मागांधी, सर आशुतोष मुखर्जी, दीनबंधु

ऐण्ड्रूज आदि ने भी सन्तोष व्यक्त किया था । यहाँ विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ खेती, कपड़ा बुनना, बढ़ईगिरि, संगीत जैसी शिल्प-कलाओं की भी शिक्षा मिलती थी । मूलत: विद्यालय का उद्देश्य देश भक्त एवं कुशल नागरिक के रूप में स्वावलम्बी छात्रों को तैयार करना था ।

इस विद्यालय का नाम और काम पूरे देश में चर्चा का विषय बन गया था । लोग यहाँ के छात्रों को कर्मठ, निष्ठावान, चरित्रवान, वाक्पटु और देशसेवक मानते थे तथा उनमें विश्वास करते थे ।

पराधीनता के उस युग में ओड़िशा प्रान्त के जन-जीवन को सँवारने वाला, देशप्रेम, स्वाधीनता, स्वदेशी प्रेम एवं आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाने वाला तथा दीन-हीन, उपेक्षित मनुष्यों को गले लगाने वाला वह मसीहा कौन था ? इस सवाल को यदि एक गरीब से पूछा जाय तो वह उन्हें 'भगवान' बताएगा, एक नौजवान उन्हें सच्चा साथी साबित करेगा एवं एक बूढ़ा उन्हें अन्धेरे की रोशनी कहेगा तथा सारा ओड़िशा प्रदेश उन्हें 'उत्कलमणि' कहकर अभिनन्दन करता दिखाई देगा ।

गोपबंधु ने ओड़िशा के सामाजिक एवं राजनैतिक परिवेश को साफ सुथरा बनाया । उन्होंने लोगों को स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाया ।

साहित्य रचना में गोपबंधु की विशेष रुचि थी । उन्होंने 'कारा कविता', 'अवकाश चिन्ता', 'बन्दीर आत्मकथा' आदि रचनाएँ की हैं । इनमें देशप्रेम का परिचय मिलता है । उन्होंने 'समाज' नाम से एक साप्ताहिक पत्र निकाला था जो आज ओड़िशा का प्रिय दैनिक समाचार पत्र बन गया है ।

'उत्कलमणि' की अभिलाषा पूर्णांग स्वतंत्र उत्कल प्रदेश देखने की थी, जो पूरी नहीं हो सकी । बाढ़पीड़ितों की सेवा करते-करते वे अस्वस्थ होकर घर लौटे, किन्तु ओड़िशा के स्वतंत्र प्रदेश बनने से पहले, १७ जून १९२८ ई० को अपराह्न ४ बजे उनके प्राण-पंखेरू उड़ गये।

यद्यपि गोपबंधु आज नहीं हैं–तथापि उनकी कीर्ति–पताका ओड़िशा ही नहीं,बल्कि समूचे देश के गौरव को बढ़ाने वाली स्वतंत्रता की अमिट निशानी बनकर आज भी फहरा रही है ।

शब्द-अर्थ

होनहार - आगे होने वाला

होनहार वीरवान के होत चीकने पात - बड़ा होने का लक्षण बचपन से दिखाई पड़ता है ।

नियति - भाग्य

सुषमा - सुन्दरता

चटसार - प्रारंभिक शिक्षा का स्थान, चटसाल

गौरव - गर्व

श्रीगणेश करना - प्रारंभ करना

कुशल - योग्य, पटु

उपेक्षित - तिरस्कृत

स्वावलम्बन - आत्मनिर्भरता

अभिनन्दन - सम्मान देना

कीर्त्ति - पताका - नाम, गुणों का प्रचार प्रसार

मातृसुख - माँ का सुख

खो जाना - डूब जाना

कृती- उन्नत, अच्छे

पद्धति - प्रणाली

तले - नीचे

दीन -हीन - गरीव, तुच्छ

गले लगाना - प्यार करना

मसीहा - देवदूत

प्राण-पंखेरू उड़ जाना - मर जाना

अभ्यास

बोध-विचार :

१. उत्कलमणि का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

२. उत्कलमणि को माँ की याद आने पर वे क्या करते थे ?

३. गोपबंधु की प्रारंभिक शिक्षा कहाँ हुई थी ?

४. गोपबंधु-किस जीवन को आदर्श मानते थे ?

५. अंग्रेजी शासन-काल में गोपबंधु ने क्या किया था ?

६. गोपबंधु ने विद्यालय की स्थापना कहाँ की और उस विद्यालय का उद्देश्य क्या था ।

७. वन विद्यालय में कौन-कौन शिक्षक थे ?

८. गोपबंधु की लिखी तीन रचनाओं के नाम लिखो ?

९. गोपबंधु की कौन सी इच्छा पूरी नहीं हुई ?

भाषा-बोध :

१. रिक्त स्थान भरो :

क. गोपबंधु के पिता का नाम ———— था ।

ख. गुरुजी ने उनकी ———— की भूरी-भूरी प्रशंसा की ।

ग. स्कूल में गोपबंधु की ———— साधारण थी ।

घ. शिक्षक और विद्यार्थियों सभी को ———— का बोध होता था ।

ङ. गोपबंधु की———— में विशेष रुचि थी ।

२. नीचे कुछ मुहावरे दिए गए हैं, उनके अर्थ लिखो :

मुहावरे

क. श्री गणेश करना

ख. अंधेरे की रोशनी

ग. प्राण-पंखेरू उड़ जाना

घ. गले लगाना

३. नीचे लिखे शब्दों के लिंग बताओ :

याद, पत्नी, गाँव, नदी, बालक, कीर्ति, अभिलाषा, मसीहा, जीवन, पूर्णिमा

४. नीचे दिये गये शब्दों के विपरीत अर्थवाले शब्द लिखो :

गरीब, स्वतंत्र, जन्म, पराधीन, नवीन

५. नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो :

नदी, जगत, बालक, दिन, रात, विद्यालय

६. निम्नलिखित वाक्यों के लिए एक-एक शब्द लिखो :

क. जहाँ पाठ पढ़ने जाते हैं.....

ख. जो दूसरों के अधीन हो.....

ग. जो देश से प्रेम करता हो.....

विशेषण :

संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता प्रकट करने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं । इसके चार भेद हैं :

१. गुणवाचक विशेषण - नया, भारी, कामचोर आदि

२. संख्यावाचक विशेषण - दो लड़कियाँ, काफी रुपये, तीन किताबें

३. परिमाणवाचक विशेषण- थोड़ी चीनी, सात लीटर दूध आदि

४. सार्वनामिक विशेषण - यह पुस्तक, वह दुकानदार, उसका स्कूल आदि

७. नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ो और विशेषण शब्दों को रेखांकित करो :

क. होनहार वीरवान के होत चीकने पात।

ख. विधवा बुआ कमला पितृगृह में रहती थी ।

ग. उन्हें दस रुपये की मासिक छात्रवृत्ति मिलती थी ।

घ. वह नदी ही उनकी माँ बन गयी थी ।

८. अपने लिए चार विशेषण शब्द लिखो ।

.....

.....

.....

.....

९. नीचे लिखे शब्दों में 'अ' उपसर्ग जोड़ो :

(उपसर्ग लगाने से शब्द के अर्थ बदल जाते हैं)

जैसे -	स्वस्थ	अस्वस्थ
	सम्मान	.....
	बोध	.....
	साधारण	.....
	विचार	.....

१०. उपसर्ग जोड़कर ऐसे दस शब्द बनाकर वाक्यों में प्रयोग करो :

अनुभव विस्तार :

१. ऐसे एक महापुरुष की जीवनी लिखो ।

२. इस पाठ से जो शिक्षा मिली, उसे दूसरों को बताओ ।